**International Journal of Sociology and Humanities**
www.sociologyjournal.net
Online ISSN: 2664-8687, Print ISSN: 2664-8679
Received: 07-04-2019, Accepted: 06-05-2019, Published: 15-05-2019
Volume 1, Issue 1, 2019, Page No. 28-31

# पत्रों के दर्पण में निराला का व्यक्तित्व

**डॉ॰ जसवीर त्यागी**
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिंदी–विभाग, राजधानी कॉलेज, राजा गार्डन, दिल्ली, भारत

DOI: https://doi.org/10.33545/26648679.2019.v1.i1a.57

**सारांश**
लेखक अपने पत्रों में सबसे ज़्यादा खुलते हैं। पत्र लेखकीय जीवन के अनेक अनछुए पक्षों को उजागर करते हैं। पत्रों में लेखक के व्यक्तित्व की अनेक विशेषताएँ उद्घाटित होती हैं। लेखक का स्वभाव, उसकी तत्कालीन मनःस्थिति तथा उसके व्यक्तिगत जीवन के संबंध में दुर्लभ सूत्र भी पत्रों में मिल जाते हैं। मनुष्य केवल वह नहीं होता जिसकी झलक उसके अनुशासित जीवन और औपचारिक संबंधों से मिलती है। उसके संपूर्ण व्यक्तित्व का परिचय उसके नित्य जीवन और छोटे–छोटे ब्यौरों से मिलता है। यह संदर्भ रचनाकार के युग को भी प्रस्तुत करता है। पत्रों के माध्यम से हम व्यक्तित्व से होकर तत्कालीन युग तक पहुँचते हैं। साहित्यकारों के पत्र उनके जीवन, साहित्य और अपने समय के प्रामाणिक दस्तावेज़ होते हैं।

**मूल शब्दः** छायावाद, पत्रात्मक सरोकार, लेखकीय–प्रकृति, निजता, सामाजिकता, साहित्यिकता, युगीन परिवेश, उद्देश्य।

## प्रस्तावना

### नराला का पत्र–साहित्य : परिचय और सरोकार

पत्र वह दर्पण है जिसमें लेखक का व्यक्तित्व प्रतिबिंबित होता है। निराला का पत्र–साहित्य अपने युग और व्यक्तित्व की प्रामाणिक झाँकी प्रस्तुत करता है। आलोचक डॉ॰ रामविलास शर्मा द्वारा संपादित 'निराला की साहित्य साधना' खण्ड–3 में निराला के 263 पत्र संकलित हैं, जो उन्होंने समय–समय पर पारिवारिक सदस्यों, मित्रों, संपादकों और रामकृष्ण मिशन के स्वामी जी को लिखे हैं। आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री द्वारा संपादित 'निराला के पत्र' में निराला के 108 पत्र हैं। निराला के ये सभी पत्र संस्कृताचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री के नाम हैं। निराला रचनावली खण्ड–8 में निराला के 197 पत्र हैं। इन पत्रों के विषय में रचनावली के संपादक डॉ॰ नंदकिशोर नवल लिखते हैं – "रचनावली के प्रस्तुत खण्ड के दूसरे भाग में निराला के पत्र संकलित हैं, पत्रों की कुल संख्या 197 हैं इसमें श्री रामकृष्ण त्रिपाठी के नाम लिखे गये चालीस पत्र डॉ॰ रामविलास शर्मा की पुस्तक 'निराला की साहित्य साधना' के तीसरे खण्ड से लिये गये हैं बाकी उनचास पत्र नये हैं। इनमें से चार पत्र श्री विनोदशंकर व्यास के नाम हैं, जो पाक्षिक 'सारिका' के पत्र विशेषांक (1 से 15 अप्रैल, 1982) से प्राप्त हुए हैं। बाकी पैंतालीस पत्र श्री दुलारेलाल भार्गव के नाम हैं।"[1]

डॉ॰ शिवगोपाल मिश्र की पुस्तक 'ऐसे थे हमारे निराला' में निराला के कुछ पत्र मिलते हैं। जिनके विषय में डॉ॰ शिवगोपाल मिश्र लिखते हैं – "संकलन में कुल 78 पत्र हैं जिनमें से 6 पत्र निराला जी द्वारा प्रेषित हैं।"[2] 'प्रसाद के नाम पत्र' पुस्तक में निराला के 16 पत्र जयशंकर प्रसाद को संबोधित हैं, हालाँकि ये सभी पत्र 'निराला की साहित्य साधना' खण्ड–3 में संकलित हैं। निराला का एक पत्र 'फ़ाइल और प्रोफ़ाइल' पत्र–संकलन में पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' के नाम है।[3] आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के नाम निराला का एक पत्र 'शांति निकेतन से शिवालिक' में मिलता है।[4]

'सम्मेलन पत्रिका' के पत्र–विशेषांक में निराला के पंद्रह पत्र 'सरस्वती' के संपादक पं॰ देवीदत्त शुक्ल को लिखे गये हैं।[5] 'सारिका' पत्र–विशेषांक में निराला के सात पत्र विनोदशंकर व्यास के नाम हैं।[6] निराला के 9 पत्र श्री महाराज कुमार रघुबीर सिंह को संबोधित हैं।[7] भारत कला भवन संग्रह में निराला के 5 पत्र संगृहित हैं।[8]

इस प्रकार हम देखते हैं कि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का पर्याप्त पत्र–साहित्य उपलब्ध होता है। फक्कड़ और मनमौजी होते हुए भी निराला अपने पत्र–व्यवहार के प्रति असावधान न थे। उनके सावधान संग्रहकर्त्ता वाले रूप की ओर संकेत करते हुए डॉ॰ रामविलास शर्मा ने लिखा – "निराला सामग्री संकलन के प्रति अत्यंत सजग थे। उनके फक्कड़पन की कहानियों के कारण जैसे उनका गृहस्थ–रूप आँखों से ओझल हो गया है, वैसे ही और इसी कारण उनका सावधान संग्रहकर्ता वाला रूप भी लोगों की आँखों से ओझल है। किंतु निराला ने गढ़ाकोला में रहते समय साहित्यिक मित्रों से प्राप्त पत्र सावधानी से रखे। इसके अतिरिक्त जहाँ से बन पड़ा, वे अपने भेजे हुए पत्र भी वहाँ से उठा लाए।"[9]

निराला के पत्रों में पत्रात्मक सरोकार भी सहजता से अभिव्यंजित हुए हैं, जो उनके पत्र–साहित्य को समझने में सहायक हैं। निराला पत्रों को संवाद का माध्यम मानते थे, ऐसा उनके इस कथन से स्पष्ट होता है – "एक अरसा फिर हुआ, हमने पत्र से संवाद नहीं मंगाया।"[10] वे पत्रों की एक सीमा स्वीकारते थे। इस भाव को उन्होंने इस प्रकार व्यक्त किया– "और बहुत–सी बातें हैं, जो पत्र में संकुचित होती है।"[11] अर्थात् सभी बातें पत्रों में नहीं कही जा सकतीं। पत्रों की गोपनीयता पर प्रकाश डालते हुए वे डॉ॰ रामविलास शर्मा को एक पत्र में लिखते हैं – "साथ जो पत्र है, वह श्री राजेन्द्र को खुद दे आइयेगा क्योंकि 'प्राइवेट' बाते हैं, आप ही तक रहें। षटकर्ण न हों।"[12] पत्रों को निराला बहुत महत्त्वपूर्ण मानते थे। विनोदशंकर व्यास को एक पत्र में वे लिखते हैं – "आप लोगों के पत्रों से बचा हूँ।"[13]

पत्रों की उपयोगिता और महत्त्व को निराला की दूरदर्शी दृष्टि ने समझ लिया था, इसीलिए अपने पुत्र रामकृष्ण त्रिपाठी को एक पत्र में उन्होंने लिखा – "हमारे पत्र न खोना।"[14] अर्थात् उन्हें संभालकर रखना, ऐसा ही भाव यहाँ व्यक्त हुआ है। एक ओर निराला पत्रों को इतना महत्त्व देते थे कि स्वयं पोस्ट करते थे – "पत्र मैं खुद पोस्ट करता हूँ।"[15] निराला मित्रों के समाचार जानने के लिए पत्र को कितना महत्त्वपूर्ण मानते थे, यह जानकीवल्लभ शास्त्री के कथन से व्यक्त होता है – "पंत की बिमारी का हाल सुनकर निराला कैसे बैचेन हो गए थे ...

यह उनके ताबड़तोड़ भेजे गए पत्रों से मालूम होगा।"[16]

निराला का पत्र–लेखन का अंदाज़ भी फक्कड़ था। कभी–कभी वे पत्र लिखकर आलस्यवश उसे भेजते न थे। जानकीवल्लभ शास्त्री को एक पत्र में लिखते हैं – "मैंने एक पत्र लिखा था, पर आलस्यवश भेजा नहीं।"[17] पत्रों के उत्तर देने के विषय में वे कहते हैं – "मैं बहुत ज़्यादा उत्तर देने का आदी नहीं।"[18]

यद्यपि निराला पत्रों को बहुत महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी मानते थे लेकिन अनेक कारणों से वे कभी पत्र का उत्तर देर से देते तो कभी पत्र पोस्ट करना ही भूल जाते थे। विनोदशंकर व्यास को एक पत्र में लिखते हैं –"ससुराल से आपको एक पत्र लिखा, पर पोस्ट करना भूल गया।"[19] कभी–कभी वे यह भी भूल जाते थे कि पत्र का उत्तर दिया भी है या नहीं, शिवपूजन सहाय को लिखे एक पत्र से यह ज्ञात होता है – "आपके पत्र का उत्तर दिया या नहीं याद नहीं।"[20] कभी–कभी तो निराला लिखने वाले का पता ही भूल जाते थे। अपनी सास अर्थात् मनोहरादेवी की माता जी को एक पत्र में लिखते हैं – "आपका पूरा पता भूल गया हूँ। अंदाज़ देखूँ कहाँ तक लड़ती है।"[21]

निराला तिथिविहीन पत्र भी लिखा करते थे।[22] और कभी वे पत्र में तिथि के साथ समय का उल्लेख भी करते थे।[23] निराला अच्छे पत्रों की प्रशंसा करने से कभी चूकते न थे। आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री को एक पत्र में लिखते हैं– "कई पत्र मेरे पास आये हैं। एक अज्ञेय का भी आया है। मजेदार है।"[24]

निराला उलझनों के कारण कई बार पत्र नहीं लिख पाते थे, और पत्र न भेज पाने की इच्छा को वे मन–ही–मन में पत्र लिखकर पूरा कर देते थे। अर्थात् यथार्थ में पत्र न लिखकर वे कल्पना में पत्र–लेखन कर लेते थे। विनोदशंकर व्यास को एक पत्र में लिखते हैं – "प्रत्यक्ष पत्र तो आपके पास नहीं गया, पर मन–ही–मन मैंने न जाने कितने पत्र आपको लिख डाले।"[25] पत्र का उत्तर समय पर न दे पाने पर निराला लज्जा और संकोच का अनुभव करते थे। बाबू गुलाब राय को लिखे एक पत्र से इसकी पुष्टि होती है – "यहाँ आपके दो कृपा–पत्र मिले। लज्जित हूँ– उत्तर समय पर नहीं दे सका। मेरे इस मशहूर मर्ज की दवा शायद इस जीवन में न होगी।"[26] मूड होने पर निराला कभी–कभी एक ही व्यक्ति को एक दिन में दो पत्र भी लिख देते थे। उन्होंने नंददुलारे वाजपेयी को 10.4.29 शाम 8 बजे हिंदी में और 10 बजे रात अंग्रेज़ी में पत्र लिखा।"[27]

निराला के पत्रों में कई स्थानों पर विरोधाभास भी मिलता है। 8.7.45 को उन्होंने केदारनाथ अग्रवाल और डॉ॰ रामविलास शर्मा को पत्र लिखे। केदार को पत्र में लिखते हैं – "यहाँ पानी गिरा।" और डॉ॰ रामविलास शर्मा को बताते हैं – "यहाँ पानी नहीं बरस रहा।"[28] निराला पत्र में पता प्रायः अंग्रेज़ी में लिखते थे,और पत्र में व्यवसाय और डिग्री का उल्लेख भी करते थे।[29] अपने जीवन के अंतिम दिनों में निराला पत्रों के प्रति उदासीन हो गये थे – "डाकखाने से अब प्रायः सरोकार नहीं रखता।"[30] और पत्र दूसरों से लिखवाने लगे थे। अपनी पौत्री छाया को एक पत्र में बताते हैं – "यह खत डॉ॰ शिवगोपाल मिश्र से लिखा रहा हूँ।"[31]

निराला के पत्रों के संदर्भ में आलोचक नंददुलारे वाजपेयी अपने एक पत्र में लिखते हैं– "आपके पत्रों में कुछ ऐसा आकर्षण, कुछ ऐसा नशा–सा मेरे लिए होता है कि इन परीक्षा के दिनों में भी रोज कम से कम एक बार उन्हें पढ़ना पड़ता है और जी करता है कि ऐसे पत्र प्रतिदिन पढ़ने को मिले, स्मंकमत या चपवदममत मिले या न मिलें। एक अजीब प्रकार की तृप्ति, एक न जाने किस तरह का संतोष होता है, थोड़ी देर के लिए जैसे जीवन में पूर्णता आ गयी हो – और कुछ न चाहिए।"[32]

निराला का पत्र पाकर नंददुलारे वाजपेयी जीवन में पूर्णता का भाव अनुभव करते हैं। इस पत्रांश से निराला के उच्च कोटि के लेखक होने के साथ–साथ श्रेष्ठ पत्र–लेखक होने का प्रमाण भी स्पष्ट मिलता है।

## निराला का व्यक्तित्व पत्रों में:

निराला आधुनिक युग के प्रतिभा संपन्न मौलिक कवि हैं। मौलिक और बड़े कवि को अपने परिवेश से संघर्ष करना पड़ता है। निराला का व्यक्तित्व एक ओजस्वी पुरुष का व्यक्तित्व था। वे गुणों के विरोधाभास थे, अतः उनके निकट रहने वाले लोग भी उनके व्यवहार के संबंध में अनिश्चित रहते थे। निराला सचमुच निराले व्यक्तित्व के धनी थे। सरस्वती संपादक आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के नाम 11.1.1921 के पत्र में वे अपने व्यक्तित्व का परिचय कुछ इस प्रकार देते हैं – "मैं कान्यकुब्ज ब्राह्मण हूँ। आपका पड़ोसी हूँ। उन्नाव जिला में पूर्वा (पूरवा) के पास रहने वाला हूँ। उम्र 22, शरीर 5 फुट 11) इंच लंबा, छाती 39 इंच चौड़ी। ह्रष्ट पुष्टांग, न तो स्थूलकाय। अक्षर हूँ, न साक्षर और न ही निरक्षर। सगा यानी माता, पिता, भाई, बहन, चाचा, चाची, स्त्री संसार कोई नही (नहीं) । सब थे किंतु 1918 में इन्फ्लुएन्जा में सब गुजर गए। .... मेरा (मेरे) पिता–पितृव्य इस स्टेट के फौजी अफ़सर थे। गणमान्य थे। मेरा जन्म यहीं हुआ। शिक्षा यहीं मिली।"[33] इससे स्पष्ट है कि निराला ने इस पत्र में अपना जीवन–वृत्त और व्यक्तित्व बड़े सुरेख और सुंदर शब्दों में अंकित कर दिया है।

निराला स्पष्टवादी और निर्भीक व्यक्ति थे। वे आत्म–विश्वासी और आत्मनिर्भर थे। सच्ची बात कहने में वे किसी से डरते नहीं थे। उन्होंने आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी को लिखा – "आपकी लिखावट से मालूम हो रहा है कि मेरे पूर्व प्रेषित पत्र की व्याख्या विज्ञ–दृष्टि से नही (नहीं) की गई।"[34] डॉ॰ रामविलास शर्मा के अनुसार –"सूर्यकांत पहले हिंदी लेखक थे जो महावीरप्रसाद द्विवेदी से कह रहे थे कि मेरे पूर्व प्रेषित पत्र की व्याख्या विज्ञ–दृष्टि से नहीं की गई।"[35]

निराला की इसी स्पष्टवादी प्रकृति के कारण उनका काफ़ी विरोध हुआ, परंतु इस तरह के विरोध सहते हुए भी वे अपने ओजस्वी व्यक्तित्व के कारण आगे बढ़ते रहे। निराला स्पष्टवादी और निर्भीक होने के साथ स्वाभिमानी भी थे। उनके मिज़ाज में बादशाहत थी और बादशाहत के साथ जिंदादिली। छतरपुर से लौटकर श्री शिवपूजन सहाय के नाम एक पत्र में उन्होंने लिखा – "गोली मार दीजिए – हम लोग भी साहित्य के बादशाह हैं – अंधे क्या जाने –।"[36] वाचस्पति पाठक को लिखे पत्र में महात्मा गांधी से हुई अपनी बातचीत का संदर्भ याद दिलाते हुए उन्होंने लिखा है – "बनिया–कुल–मुकुट मणि महात्मा गांधी ने जब मुझसे कहा था – "मैं तो उथला आदमी हूँ, आपको याद होगा मैंने जवाब दिया था, हम लोग उथले को गहरा और गहरे को उथला कर सकते हैं।"[37] इस पत्रांश से स्पष्ट है, निराला किसी के सामने झुकना नहीं जानते थे। निराला सत्य के समर्थक थे। विनोदशंकर व्यास को एक पत्र में वे लिखते हैं – "मैं बातें नहीं रंगता, न मुझे बातें रंगना आता है, बिल्कुल सत्य है।"[38] एक अन्य पत्र में वे जानकीवल्लभ शास्त्री को लिखते हैं – "मैं आपके आलोचक का अदब करता हूँ। साथ ही एक मित्र की हैसियत से सलाह देता हूँ : सत्य न घटकर है न बढ़कर।"[39]

निराला के व्यक्तित्व में संवेदनशीलता और परदुःखकातरता कूट–कूट कर भरी हुई थी। वे दूसरों के दुःख–दर्द से बहुत जल्दी प्रभावित होते थे। शिवपूजन सहाय को 15.12.27 को लिखे एक पत्र में कहते हैं – "श्रीमान बाबू साहब के पत्र से आपके पैर में चोट आ जाने की ख़बर पा विचलित हूँ।"[40] जयशंकर प्रसाद के बीमार होने पर जानकीवल्लभ शास्त्री को पत्र में लिखते हैं – "प्रसाद जी को बहुत दुर्बल देखा। दुःख और शंका हुई।"[41] इन पंक्तियों में निराला की परदुःखकातरता के साथ–साथ जयशंकर प्रसाद जी के प्रति उनका प्रेम भी प्रकट होता है।

निराला अपने विचार दूसरों पर आरोपित नहीं करते थे। वे वैयक्तिक स्वतंत्रता के समर्थक थे और उपदेशात्मक को अच्छा न मानते थे। जानकीवल्लभ शास्त्री को एक पत्र में लिखते हैं –

"उपदेश के रूप में तो मैं कुछ कह नहीं सकता। उपदेश आपको अपने भीतर से मिलेंगे।" [42] और एक अन्य पत्र में ही शास्त्री को लिखते हैं – "रही बात सीख देने की, जो इस पत्र में आपने लिखी है, सो मैं खुद जबकि दूसरों की सीख नहीं ले सका तब आपको क्या सीख दूँ?"[43]

निराला को गाने–बजाने का शौक था। मित्र–मण्डली के सामने गाकर अपनी कविता सुनाते थे। विनोदशंकर व्यास को अपने संगीत–प्रेम के विषय में उन्होंने लिखा– "आपने जो हारमोनियम मेरे लिए ख़रीदा है, इतने दिन में एक यही काम आपने समझ का किया है। निठल्ले दिन काटने से, मेरे विचार से गाना–बजाना बहुत अच्छा है।"[44] निराला संगीत के साथ–साथ खेलकूद तथा कसरत–कुश्ती के भी शौकिन थे। वे स्वास्थ्य के प्रति सजग रहते थे। शिवपूजन सहाय को लिखते हैं – "इस समय ध्यान केवल स्वास्थ्य पर है।"[45] और डॉ॰ रामविलास शर्मा को कहते हैं – "कुछ कसरत करने का विचार है।"[46] फुटबाल निराला का प्रिय खेल था। शिवपूजन सहाय को पत्र में लिखते हैं – "फुटबाल हो रहा था, मैं भी इंबा के लिए तैयार हो गया। फिसला एक शॉट, दाहिना विवज पीड़ा हो गया।"[47]

निराला की खान–पान में विशेष रुचि थी। उन्हें मिठाइयाँ, आइसक्रीम, पान, भांग, तंबाकू, ठंडाई इत्यादि के सेवन में आनंद प्राप्त होता था। माँसाहारी भोजन एवं मदिरापान और धूम्रपान वे घर वालों की इच्छा के प्रतिकूल जाकर करते थे। ऐसे संकेत रामस्वरूप शमा[48], रामविलास शर्मा[49] और केदारनाथ अग्रवाल[50] के पत्रों में मिलते हैं। वे भोजन पकाने की कला में निष्णात थे, इसीलिए वाचस्पति पाठक को बताते हैं – "इस समय मैं भोजन भी पकाता हूँ।"[51]

जानकीवल्लभ शास्त्री को लिखे पत्र में वे मिष्ठान–प्रेम की चर्चा करते हुए लिखते हैं – "पागल जी की मिठाई और चाय खा–पीकर प्रसाद जी को देखने के लिए चला।"[52] निराला आम, लीची, अमरुद आदि फलों के रसिक–प्रेमी थे। उनके बहुत से पत्रों में उनका यह फल–प्रेम प्रकट होता है। जानकीवल्लभ शास्त्री को लिखते हैं – "लीची के मचे होंगे और आम के।"[53] और रामप्रसाद को बताते हैं – "आजकल इलाहाबाद के अमरूदों की बहार है।"[54] नरेन्द्र शर्मा के महाराज श्री रघुबीर सिंह को 8 जून, 1936 के लिखे पत्र में भी आम की चर्चा मिलती है।[55]

निराला हौसला अफ़जाई करने वालों में अव्वल थे। वे नए लेखकों की रचनाओं की प्रशंसा करने और उन्हें प्रोत्साहन देने में आगे रहते थे। जानकीवल्लभ शास्त्री को एक पत्र में लिखते हैं – "आपकी कविता मुझे पसंद आई।"[56] एक अन्य पत्र में बताते हैं –"इलाहाबाद से एक मासिक उच्छृंखल निकला है, रामविलास जी के कई लेख और कविताएँ बहुत अच्छी–अच्छी उसके अब तक के अंकों में निकल चुकी हैं।"[57]

निराला को यात्रा करना प्रिय था। वे कवि–सम्मेलनों, साहित्यिक समारोहों में भाग लेने के लिए इधर–उधर आते–जाते रहते थे। उनके लिखे पत्रों से इस बात की पुष्टि होती है। विनोदशंकर व्यास को लिखते हैं – "लखनऊ से किसी तरह घसीटकर मैं कानपुर होता हुआ बांदा चला गया था। बांदा से चित्रकूट। 15–20 दिन लग गये। आज बांदा से लखनऊ आया। एक रोज़ घर रहकर उन्नाव कान्यकुब्ज सम्मेलन चला जाऊँगा।"[58] एक अन्य पत्र में जानकीवल्लभ शास्त्री को कहते हैं – "गरमियों में चलिए कश्मीर हो आया जाये।"[59] इस पत्रांश में निराला के यात्रा–प्रेमी होने के साथ–साथ सौंदर्य–प्रेमी होने का संकेत भी मिलता है।

## निष्कर्ष

रूप में हम पाते हैं कि निराला अपने पत्रों में अध्ययन के प्रति जिज्ञासु, बहुभाषाविद्, परिजनों और मित्रों के शुभचिंतक, स्पष्टवादी, निडर, सत्य के समर्थक, संवेदनशील, परदुःखकातर, संघर्षशील, उपदेश विरोधी, संगीत–प्रेमी, खान–पान के शौकीन, नये लेखकों के प्रोत्साहक, यायावर और प्रकृति–प्रेमी के रूप में उपस्थित होते हैं। निराला के पत्रों में उनके व्यक्तित्व के अनेक दुर्लभ सूत्र उजागर होते हैं जो उनके व्यक्तित्व को समझने के साथ–साथ उनके साहित्य के उचित मूल्यांकन में भी सहायक सिद्ध होते हैं।

## संदर्भ


1. नवल, नंदकिशोर, संपा॰, निराला रचनावली, खण्ड–आठ, (1983), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–15
2. मिश्र, शिवगोपाल, ऐसे थे हमारे निराला, (2002), तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–15
3. शर्मा 'उग्र', पाण्डेय बेचन संपा॰, फ़ाइल और प्रोफ़ाइल, (साहित्यकारों के पत्र उग्र के नाम) (1970) राजीव प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, पृष्ठ–441
4. सिंह, शिवप्रसाद संपा॰ शांति निकेतन से शिवालिक, (1967), भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, पृष्ठ–473
5. शुक्ल, प्रेमनारायण संपा॰, सम्मेलन पत्रिका (पत्र विशेषांक) (शक 1903–04) भाग–68, संख्या 1–2,
6. देखिये – सारिका–पत्र–विशेषांक 1 से 15 अप्रैल 1982, पृष्ठ–62–63
7. देखिये – श्री नटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ जिला मंदसोर (मध्य प्रदेश) में संगृहित साहित्यकारों के पत्र
8. देखिये – भारत कला भवन, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, पंजीकरण संख्या 10768 से 10773
9. शर्मा, डॉ॰ रामविलास, निराला की साहित्य साधना, भाग–3, (1976), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, भूमिका, पृष्ठ–64
10. शास्त्री, जानकीवल्लभ संपा॰, निराला के पत्र, (1971), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली–पटना, पृष्ठ–255
11. वही, पृष्ठ–131
12. शर्मा, डॉ॰ रामविलास,निराला की साहित्य साधना, भाग–3, पृष्ठ–340
13. वही, पृष्ठ–281
14. वही, पत्रांक 230, 1.4.46 का पत्र
15. शास्त्री, जानकीवल्लभ संपा॰, निराला के पत्र, पृष्ठ–177
16. वही, पृष्ठ–214
17. वही, पृष्ठ–80
18. वही, पृष्ठ–74
19. सारिका–पत्र–विशेषांक 1 से 15 अप्रैल, 1982, पृष्ठ–62
20. शर्मा, डॉ॰ रामविलास, निराला की साहित्य साधना–3, पृष्ठ–225
21. वही, पृष्ठ–243
22. शास्त्री, जानकीवल्लभ संपा॰, निराला के पत्र, देखिये पत्र–8,67
23. वही, पत्र 12 में 6 पी॰एम॰, पृष्ठ–102
24. वही, पृष्ठ–216
25. शर्मा, डॉ॰ रामविलास, निराला की साहित्य साधना–3, पृष्ठ–237
26. वही, पृष्ठ–245
27. वही, पृष्ठ–251–252
28. वही, पृष्ठ–353
29. देखिये, वही, पृष्ठ–310,316,319
30. शास्त्री, जानकीवल्लभ संपा॰, निराला के पत्र, पृष्ठ–264
31. वही, पृष्ठ–169–170
32. शास्त्री, जानकीवल्लभ, संपा॰, निराला के पत्र, पृष्ठ–264
33. शर्मा, डॉ॰ रामविलास, निराला की साहित्य साधना–3, पृष्ठ–216
34. वही, पृष्ठ–115–116

35. वही, पृष्ठ–43
36. वही, पृष्ठ–239
37. वही, पृष्ठ–291
38. वही, पृष्ठ–247
39. शास्त्री, जानकीवल्लभ, संपा॰, निराला के पत्र, पृष्ठ–114
40. शर्मा, डॉ॰ रामविलास, निराला की साहित्य साधना–3, पृष्ठ–223
41. शास्त्री, जानकीवल्लभ, संपा॰, निराला के पत्र, पृष्ठ–124
42. वही, पृष्ठ–75
43. वही, पृष्ठ–167
44. शर्मा, डॉ॰ रामविलास, निराला की साहित्य साधना–3, पृष्ठ–247
45. वही, पृष्ठ–246
46. वही, पृष्ठ–326
47. वही, पृष्ठ–243
48. वही, पृष्ठ–410–414
49. वही
50. वही
51. शर्मा, डॉ॰ रामविलास, निराला की साहित्य साधना–3, पृष्ठ–295
52. शास्त्री, जानकीवल्लभ संपा॰, निराला के पत्र पृष्ठ–124
53. वही, पृष्ठ–221
54. शर्मा, डॉ॰ रामविलास, निराला की साहित्य साधना–3, पृष्ठ–322
55. देखिये – नटनागर शोध संस्थान में 'साहित्यकारों के पत्र'
56. शास्त्री, जानकीवल्लभ संपा॰, निराला के पत्र, पृष्ठ–79
57. वही, पृष्ठ–167
58. शर्मा, डॉ॰ रामविलास, निराला की साहित्य साधना–3, पृष्ठ–322
59. शास्त्री, जानकीवल्लभ संपा॰, निराला के पत्र, पृष्ठ–247